मिनी-मैक्स सीरीज
हितोपदेश
की
प्रसिद्ध कहानियाँ
प्रभात

हितोपदेश की प्रसिद्ध कहानियाँ

महेश दत्त शर्मा

1

देने की आदत

एक भिखारी सुबह—सुबह भीख माँगने निकला। चलते समय उसने अपनी झोली में जौ के मुट्ठी भर दाने डाल लिये। टोटके या अंधविश्वास के कारण भिक्षाटन के लिए निकलते समय भिखारी अपनी झोली खाली नहीं रखते। थैली देखकर दूसरों को लगता है कि इसे पहले से किसी ने दे रखा है। पूर्णिमा का दिन था, भिखारी सोच रहा था कि आज ईश्वर की कृपा होगी तो मेरी यह झोली शाम से पहले ही भर जाएगी।

अचानक सामने से राजपथ पर उसी देश के राजा की सवारी आती दिखाई दी। भिखारी खुश हो गया। उसने सोचा, राजा के दर्शन और उनसे मिलनेवाले दान से सारे दरिद्र दूर हो जाएँगे, जीवन सँवर जाएगा।

जैसे—जैसे राजा की सवारी निकट आती गई, भिखारी की कल्पना और उत्तेजना भी बढ़ती गई। जैसे ही राजा का रथ भिखारी के निकट आया, राजा ने अपना रथ रुकवाया, उतरकर उसके निकट पहुँचे। भिखारी की तो मानो साँसें ही रुकने लगीं। लेकिन राजा ने उसे कुछ देने के बदले उल्टे अपनी बहुमूल्य चादर उसके सामने फैला दी और भीख की याचना करने लगा।

भिखारी को समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे। अभी वह सोच ही रहा था कि राजा ने पुन: याचना की। भिखारी ने अपनी झोली में हाथ डाला, मगर हमेशा दूसरों से लेनेवाला मन देने को राजी नहीं हो रहा था। जैसे—तैसे उसने दो दाने जौ के निकाले और उन्हें राजा की चादर पर डाल दिया।

उस दिन भिखारी को रोज से अधिक भीख मिली, मगर वे दो दाने देने का मलाल उसे सारे दिन रहा। शाम को जब उसने झोली पलटी तो उसके आश्चर्य की सीमा न रही। जो जौ वह ले गया था, उसके दो दाने सोने के हो गए थे। उसे समझ में आया कि यह दान की ही महिमा के कारण हुआ है। वह पछताया कि काश, उस समय राजा को और अधिक जौ दी होती, लेकिन नहीं दे सका, क्योंकि देने की आदत जो नहीं थी।

❑

2

सही कीमत

एक बार लोहे की दुकान में अपने पिता के साथ काम कर रहे एक बालक ने अचानक ही अपने पिता से पूछा, 'पिताजी, इस दुनिया में मनुष्य की क्या कीमत होती है?'

पिता एक छोटे से बच्चे से ऐसा गंभीर सवाल सुनकर हैरान रह गए। फिर बोले, 'बेटे, एक मनुष्य की कीमत आँकना बहुत मुश्किल है, वो तो अनमोल है।'

बालक—'क्या सभी उतने ही कीमती और महत्त्वपूर्ण हैं?'

पिता—'हाँ बेटे।'

बालक कुछ समझा नहीं, उसने फिर सवाल किया—'तो फिर इस दुनिया में कोई गरीब तो कोई अमीर क्यों है? किसी का कम आदर तो किसी का ज्यादा क्यों होता है?'

सवाल सुनकर पिता कुछ देर तक शांत रहे और फिर बालक से गोदाम में पड़ा एक सरिया लाने को कहा।

सरिया लाते ही पिता ने पूछा—'इसकी क्या कीमत होगी?'

बालक—'50 रुपए।'

पिता—'अगर मैं इसके बहुत से छोटे—छोटे कील बना दूँ तो इसकी क्या कीमत हो जाएगी?'

बालक कुछ देर सोचकर बोला—'तब तो ये और महँगा बिकेगा। लगभग 200 रुपए का।'

पिता—'अगर मैं इस लोहे से घड़ी के बहुत सारे स्प्रिंग बना दूँ तो?'

बालक कुछ देर गणना करता रहा और फिर एकदम से उत्साहित होकर बोला—'तब तो इसकी कीमत बहुत ज्यादा हो जाएगी।'

फिर पिता उसे समझाते हुए बोले—'ठीक इसी तरह मनुष्य की कीमत इसमें नहीं है कि अभी वो क्या है, बल्कि इसमें है कि वो अपने आप को क्या बना सकता है।'

बालक अपने पिता की बात समझ चुका था। हम अपनी सही कीमत आँकने में अकसर गलती कर देते हैं।

3

मन में झाँको

एक बार की बात है, किसी शहर में एक सेठ रहता था। अत्यधिक धनी होने पर भी वह हमेशा दु:खी ही रहता था। एक दिन ज्यादा परेशान होकर वह एक ऋषि के पास गया और अपनी सारी समस्या ऋषि को बताई। उन्होंने सेठ की बात ध्यान से सुनी और कहा कि कल तुम इसी वक्त फिर से मेरे पास आना, मैं कल ही तुम्हें तुम्हारी सारी समस्याओं का हल बता दूँगा ।

सेठ खुशी—खुशी घर गया और अगले दिन जब फिर से ऋषि के पास आया तो उसने देखा कि ऋषि जमीन पर कुछ ढूँढ़ने में व्यस्त थे। सेठ ने पूछा, 'महर्षि, आप क्या ढूँढ़ रहे हैं?'

ऋषि बोले, 'मेरी एक अँगूठी गिर गई है, मैं वही ढूँढ़ रहा हूँ, पर काफी देर हो गई है; लेकिन अँगूठी मिल ही नहीं रही है।'

यह सुनकर वह सेठ भी अँगूठी ढूँढ़ने में लग गया। जब काफी देर हो गई तो सेठ ने फिर गुरुजी से पूछा कि आपकी अँगूठी कहाँ गिरी थी। ऋषि ने जवाब दिया, 'अँगूठी मेरे आश्रम में गिरी थी, पर वहाँ काफी अँधेरा है, इसीलिए मैं यहाँ बाहर आकर ढूँढ़ रहा हूँ।'

सेठ ने चौंकते हुए पूछा, 'जब आपकी अँगूठी आश्रम में गिरी है तो यहाँ क्यूँ ढूँढ़ रहे हैं?'

ऋषि ने मुसकराते हुए कहा, 'यही तुम्हारे कल के प्रश्न का उत्तर है। खुशी तो मन में छुपी है, लेकिन तुम उसे धन में खोजने की कोशिश कर रहे हो। इसीलिए तुम दु:खी हो, यह सुनकर सेठ ऋषि के पैरों में गिर गया।'

❑

4

सेवाभक्ति

सब सुख—साधनों से अनजान मनोहर अपने माता—पिता की सेवा करता रहा। एक दिन उसकी सेवाभक्ति से खुश होकर भगवान् धरती पर आ गए। उस वक्त मनोहर अपनी माँ के पाँव दबा रहा था। भगवान् दरवाजे के बाहर से बोले, 'दरवाजा खोलो बेटा, मैं तुम्हारी माता—पिता की सेवा से प्रसन्न होकर तुम्हें वरदान देने आया हूँ।'

मनोहर ने कहा, 'इंतजार करो प्रभु, मैं माँ की सेवा में लगा हूँ।'

भगवान् बोले, 'देखो, मैं वापस चला जाऊँगा।'

'आप जा सकते हैं भगवान्, मैं सेवा बीच में नहीं छोड़ सकता।'

कुछ देर बाद उसने दरवाजा खोला, भगवान् बाहर खड़े थे। बोले, 'लोग मुझे पाने के लिए कठोर तपस्या करते हैं, मैं तुम्हें सहज में मिल गया और तुमने मुझे प्रतीक्षा करवाई।'

मनोहर ने जवाब दिया, 'हे ईश्वर, जिस माँ—बाप की सेवा ने आपको मेरे पास आने को मजबूर कर दिया, उन माँ—बाप की सेवा बीच में छोड़कर मैं दरवाजा खोलने कैसे आता?'

❑

5

शुभचिंतक

एक राजा बड़ा सरल और नेक दिल का था। उसके प्रशंसक और भक्त बनकर अनेक लोग राजदरबार में पहुँचते और कुछ ठग कर ले जाते। एक से दूसरे को खबर लगी। चर्चा फैली। कुछ—न—कुछ लाभ उठाने की इच्छा से अनगिनत लोग राजा के प्रशंसक और शुभचिंतक बनकर दरबार में पहुँचने लगे।
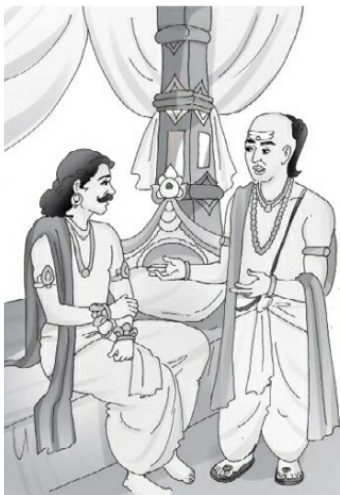
इस बढ़ती भीड़ को देखकर राजा स्वयं हैरान रहने लगा। एक दिन उसने विचारा कि इतने लोग सच्चे शुभचिंतक नहीं हो सकते। इनमें से असली और नकली की परख करनी चाहिए। राजा ने पुरोहित से परामर्श करके दूसरे दिन बीमार होने का बहाना बना लिया और घोषणा करा दी कि पाँच व्यक्तियों का रक्त मिलने से रोग की चिकित्सा हो सकेगी। रोग ऐसा भयंकर है कि इसके अतिरिक्त और कोई इलाज नहीं। सो जो राजा के शुभचिंतक हों, अपना प्राणदान देने के लिए उपस्थित हों।

घोषणा सुनकर राज्य भर में हलचल मच गई। एक—से—एक बढ़कर अपने को शुभचिंतक बतानेवालों में से एक भी दरबार में नहीं पहुँचा।

राजा और उसके पुरोहित दोनों ही बैठकर हुए असली—नकली की परीक्षा के इस खेल पर विनोद करने लगे। पुरोहित ने कहा, 'राजन, हमारी ही तरह परमात्मा भी अपने सच्चे—झूठे भक्तों की परीक्षा लेता रहता है। परमात्मा का प्रयोजन पूरा करनेवाले सच्चे भक्त संसार में नहीं के बराबर दिखते हैं, जबकि उससे कुछ याचना करनेवाले स्वार्थियों की भीड़ सदा ही उसके दरबार में लगी रहती है।'

ऋण

एक राजा बड़ा न्यायप्रिय था। वह अपनी प्रजा के दु:ख—दर्द में शामिल होने की हरसंभव कोशिश करता था। प्रजा भी उसका बहुत आदर करती थी। एक दिन वह जंगल में शिकार के लिए जा रहा था। रास्ते में उसने एक वृद्ध को एक छोटा सा पौधा लगाते देखा।

राजा ने उसके पास जाकर कहा, 'यह आप किस चीज का पौधा लगा रहे हैं?'

वृद्ध ने धीमे स्वर में कहा, 'अखरोट का।'

राजा ने हिसाब लगाया कि उसके बड़े होने और उस पर फल आने में कितना समय लगेगा। हिसाब लगाकर उसने अचरज से वृद्ध की ओर देखा। फिर बोला, 'सुनो भाई, इस पौधे के बड़े होने और उस पर फल आने में कई साल लग जाएँगे, तब तक तुम तो रहोगे नहीं।'

वृद्ध ने राजा की ओर देखा। राजा की आँखों में मायूसी थी। उसे लग रहा था कि वृद्ध ऐसा काम कर रहा है, जिसका फल उसे नहीं मिलेगा।

वृद्ध राजा के मन के विचार को ताड़ गया। उसने राजा से कहा, 'आप सोच रहे होंगे कि मैं पागलपन का काम कर रहा हूँ। जिस चीज से आदमी को फायदा नहीं पहुँचता, उस पर कौन मेहनत करता है, लेकिन यह भी सोचिए कि इस बूढ़े ने दूसरों की मेहनत का कितना फायदा उठाया है? दूसरों के लगाए पेड़ों के कितने फल अपनी जिंदगी में खाएँ हैं। क्या उस ऋण को उतारने के लिए मुझे कुछ नहीं करना चाहिए? क्या मुझे इस भावना से पेड़ नहीं लगाने चाहिए कि उनसे फल दूसरे लोग खा सकें?'

बूढ़े की बात सुनकर राजा ने भी निश्चय किया कि वह प्रतिदिन एक पौधा लगाएगा।

❑

6

यकीन

एक आदमी कहीं से गुजर रहा था, तभी उसने सड़क के किनारे बँधे हाथियों को देखा और अचानक रुक गया। उसने देखा कि हाथियों के अगले पैर में एक रस्सी बँधी हुई है। उसे इस बात का बड़ा अचरज हुआ कि हाथी जैसे विशालकाय जीव लोहे की जंजीरों की जगह बस एक छोटी सी रस्सी से बँधे हुए हैं।

ये स्पष्ट था कि हाथी जब चाहते, तब अपने बंधन तोड़ कर कहीं भी जा सकते थे, पर किसी वजह से वो ऐसा नहीं कर रहे थे। उसने पास खड़े महावत से पूछा, 'भला ये हाथी किस प्रकार इतनी शांति से खड़े हैं और भागने का प्रयास नहीं कर रहे हैं? 'इन हाथियों को छोटी सी इन रस्सियों से बाँधा जाता है। क्या इनके पास इतनी शक्ति भी नहीं होती कि इस बंधन को तोड़ सकें?'

तब महावत ने कहा, 'बचपन में बार—बार प्रयास करने पर भी रस्सी न तोड़ पाने के कारण इन्हें धीरे—धीरे यकीन हो जाता है कि वे इन रस्सियों को नहीं तोड़ सकते और बड़े होने पर भी उनका ये यकीन बना रहता है, इसलिए वे कभी इसे तोड़ने का प्रयास ही नहीं करते।'

आदमी आश्चर्य में पड़ गया कि ये ताकतवर जानवर सिर्फ इसलिए अपना बंधन नहीं तोड़ सकते, क्योंकि वे इस बात में यकीन करते हैं।

हममें से कितने ही लोग आरंभिक असफलता के कारण ये मान बैठते हैं कि अब हमसे ये काम हो ही नहीं सकता और अपनी ही बनाई हुई मानसिक जंजीरों में जकड़े—जकड़े पूरा जीवन गुजार देते हैं। याद रखिए, असफलता जीवन का एक हिस्सा है और निरंतर प्रयास करने से ही सफलता मिलती है।

❑

7

परोपकार

बहुत समय पहले की बात है। एक जौहरी की दुकान में कई आदमी काम करते थे। जौहरी का कारोबार अच्छा चलता था। दुकान में जगह कम होने की वजह से जौहरी ने एक कारीगर को दुकान के बाहर बैठा दिया। वह दुकान के बाहर ही बैठकर सोना गलाकर उसको हथौड़े से कूट—पीटकर सुंदर गहने बनाता था।

सुनार के बगल की दुकान में एक लोहार की दुकान थी। लोहार लोहे को गरम करके हथौड़े से जोर—जोर से पीटकर लोहे के औजार बनाया करता था। एक दिन जब सुनार का कारीगर सोने को गला रहा था तो उसमें से सोने का एक कण उछलकर गरम लोहे के कण के साथ जा मिला। सोने के कण ने देखा कि लोहे के कण बहुत उदास हैं। उसने पूछा, 'क्यूँ भाई इतने उदास क्यूँ हो?'

लोहे के कण ने जवाब दिया, 'तुम्हें तो कोई और पीटता है। हमें तो हमारे ही अपने सगे जोर—जोर से पीटते रहते हैं। अपनों के पीटे जाने पर कुछ अधिक ही दर्द होता है।'

इस पर सोने के कण ने जवाब दिया, 'हम लोगों को खुश होना चाहिए कि वे हमें पीटकर एक सुंदर आकर भी तो देते हैं, जिससे हम लोगों के काम आ सकते हैं। आप लोगों को तो और भी खुश होना चाहिए, क्योंकि आप के अपने ही तो आप का भविष्य बना रहे हैं। भविष्य बनाने में थोड़ी—बहुत परेशानी तो उठानी ही पड़ती है, इसमें उदासी कैसी। दूसरों के काम आने के लिए अगर हमें थोड़ी—बहुत तकलीफ भी उठानी पड़े तो खुश होकर उठानी चाहिए।'

❑

8

दोस्ती का फर्ज

एक जंगल में एक बाघ रहता था। उसका एक बच्चा भी था। दोनों एक साथ रहते थे। बाघ दिन में शिकार करने जंगल में चला जाता था, पर बच्चा अपनी माँद के आस—पास ही रहता था।
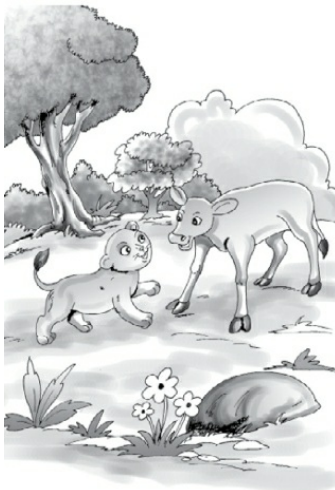
उस जंगल में एक गाय भी रहती थी। उसका भी एक बछड़ा था। गाय भी दिन में चरने चली जाती थी। बछड़ा आस—पास ही रहता था। एक दिन गाय के बछड़े को बाघ का बच्चा दिखाई दिया, वह डर गया और छुप गया। शाम को जब उसकी माँ आई तो वह बाहर आया। अपनी माँ का दूध पीकर बछड़ा खेलने लगा। उसे माँ का आसरा मिल गया।

अगले दिन फिर से गाय और बाघ जंगल की ओर चले गए, दोनों के बच्चे अपनी—अपनी जगह खेलने लगे। बाघ के बच्चे की नजर गाय के बछड़े पर पड़ गई। वह उसकी ओर दोस्ती के लिए बढ़ा। गाय का बछड़ा पहले तो डर गया, पर बाघ के बच्चे के कहने पर वह रुक गया। बाघ के बच्चे ने गाय के बछड़े को कहा कि हम दोस्ती कर लेते हैं।

गाय के बछड़े ने जवाब दिया कि तुम लोग मांसाहारी हो, हम लोग शाकाहारी, तो हममें दोस्ती कैसी?

बाघ के बच्चे ने कहा कि हम लोग मांसाहारी जरूर हैं, पर तेरी—मेरी दोस्ती पक्की। जब हमारी माताएँ जंगल को चली जाती हैं, तब हम आपस में खेल लिया करेंगे।

यह सुनकर गाय के बच्चे को सुकून मिला और उसने आगे आकर बाघ के बच्चे को गले से लगा लिया। दोनों ने कसमें खाईं कि कुछ भी हो हम अपनी दोस्ती नहीं तोड़ेंगे, चाहे इसके लिए हमें अपनी माताओं से ही क्यों न लड़ना पड़े।

गाय और बाघ में तो पहले से ही दुश्मनी थी, इस बात को बच्चे जानते थे। गाय रोज अपने बछड़े के लिए दूध निकालकर रख जाती थी। एक दिन गाय ने अपने बछड़े से कहा कि जिस दिन कभी मेरे इस दूध का रंग लाल हो जाए, उस दिन समझना कि तुम्हारी माँ को किसी बाघ ने खा लिया है।

गाय के बच्चे ने अपनी माँ से कहा कि ऐसा कभी नहीं होगा।

अगले दिन वह कुछ उदास था। बाघ के बच्चे ने उससे कारण पूछा तो गाय के बछड़े ने अपनी माँ द्वारा कहे शब्द उसको बता दिए। बाघ के बच्चे ने कहा, ऐसा कभी भी नहीं होगा। और दोनों खेलने लग गए।

एक दिन बाघ की नजर गाय पर पड़ गई और उसने गाय को मारने की सोच ली। गाय रोज उससे बचकर निकल जाती थी। एक दिन बाघ गाय के रास्ते को घेर कर बैठ गया और जब गाय नजदीक आई तो उस पर हमला बोल दिया। बाघ ने गाय को मारकर खा लिया। उधर जब गाय का बछड़ा दूध पीने को गया तो उसने देखा कि दूध लाल हो गया है। वह समझ गया कि बाघ ने मेरी माँ को मार दिया है। वह बाघ के बच्चे के पास गया और उसे सारी बात बताई कि उसकी माँ ने आज मेरी माँ को मार दिया है, क्योंकि दूध का रंग लाल हो गया है।

बाघ के बच्चे ने कहा, 'अगर मेरी माँ ने तेरी माँ को मारा होगा तो मेरी माँ भी जिंदा नहीं बचेगी।' शाम को जब गाय वापस नहीं आई और बाघ वापस आ गया तो पता चल गया कि गाय को बाघ ने मार खाया है। बाघ के बच्चे ने भी अपनी माँ को मारने की सोच ली। बाघ के बच्चे ने गाय के बछड़े को कहा 'मेरी माँ ने तेरी माँ को मारकर खाया है, अब तू छुपकर देखना मैं कैसे अपनी माँ को मारता हूँ।' यह कहकर बाघ का बच्चा अपनी माँ के पास गया और उसे कहा कि वह एक ऊँची जगह पर बैठ जाए, मैं दूर से आकर उसे छुऊँगा। ऐसा कहते हुए उसने अपनी माँ को एक टीले पर बैठा दिया और तेजी से आकर उसे धक्का दे दिया।

बाघ काफी दूर जा गिरा और उसकी मौत हो गई। इस तरह बाघ के बच्चे ने अपनी दोस्ती का फर्ज अदा किया और दोनों की दोस्ती हमेशा के लिए अटल रही।

❑

9

गलत संगत

किसी शहर में एक सेठ रहता था। सेठ का एक बेटा था। सेठ के बेटे की दोस्ती कुछ ऐसे लड़कों से थी, जिनकी आदत खराब थी। बुरी संगत में रहते थे। सेठ को ये सब अच्छा नहीं लगता था। सेठ ने अपने बेटे को समझाने की बहुत कोशिश की, पर कामयाब नहीं हुआ। जब भी सेठ उसको समझाने की कोशिश करता बेटा कह देता कि मैं उनकी गलत आदतों को नहीं अपनाता। इस बात से दु:खी होकर सेठ ने अपने बेटे को सबक सिखाना चाहा।

एक दिन सेठ बाजार से कुछ सेब खरीदकर लाया। उनमें एक सेब गला हुआ था। घर आकर सेठ ने अपने लड़के को सेब देते हुए कहा, 'इनको अलमारी में रख दो कल खाएँगे। जब बेटा सेब रखने लगा तो एक सेब सड़ा हुआ देखकर सेठ से बोला, 'यह सेब तो सड़ा हुआ है।'

सेठ ने कहा, 'कोई बात नहीं कल देख लेंगे।'

दूसरे दिन सेठ ने अपने बेटे से सेब निकालने को कहा। सेठ के बेटे ने जब सेब निकाले तो आधे से जादा सेब सड़े हुए थे। सेठ के लड़के ने कहा, 'इस एक सेब ने तो बाकी सेबों को भी सड़ा दिया।'

तब सेठ ने कहा, 'यह सब संगत का असर है। बेटा इसी तरह गलत संगत में पड़कर सही आदमी भी गलत काम करने लगता है। गलत संगत को छोड़ दो।'

बेटे की समझ में बात आ गई और उसने वादा किया कि अब वह गलत संगत में नहीं जाएगा, हमेशा अच्छी संगत में ही रहेगा।

❑

10

स्वाधीन

एक कुत्ता और बाघ दोस्त बन गए। कुत्ता काफी मोटा—ताजा था और बाघ दुबला—पतला। एक दिन बाघ ने कुत्ते से कहा, 'भाई, एक बात बताओ, तुम इतने मोटे—तगड़े और बलशाली कैसे हुए? तुम रोज क्या खाते हो? मैं तो दिन—रात भोजन की खोज में घूमकर भी भरपेट नहीं खा पाता। किसी—किसी दिन तो मुझे उपवास भी करना पड़ता है। भोजन न मिल पाने के कारण ही मैं इतना कमजोर हूँ।'

कुत्ते ने कहा, 'मैं जो करता हूँ, तुम भी अगर वैसा ही कर सको तो तुम्हें भी मेरे जैसा ही भोजन मिल जाएगा।'

बाघ ने पूछा, 'तुम्हें क्या करना पड़ता है, जरा बताओ तो सही?'

कुत्ते ने कहा, 'कुछ नहीं, रात को मालिक के मकान की रखवाली करनी पड़ती है।'

बाघ बोला, 'बस इतना ही। इतना तो मैं भी कर सकता हूँ। मैं भोजन की तलाश में वन—वन भटकता हुआ धूप तथा वर्षा से बड़ा कष्ट पाता हूँ। अब और यह क्लेश नहीं सहा जाता। यदि धूप और वर्षा के समय घर में रहने को मिले और भूख के समय भरपेट खाने को मिले तब तो मेरे प्राण बच जाएँगे।'

बाघ की दु:ख भरी बातें सुनकर कुत्ते ने कहा, 'तो फिर मेरे साथ आओ। मैं मालिक से कहकर तुम्हारे लिए सारी व्यवस्था करा देता हूँ।'

बाघ कुत्ते के साथ चल पड़ा। थोड़ी देर चलने के बाद बाघ को कुत्ते की गरदन पर एक दाग दिखाई पड़ा। यह देखकर बाघ ने कुत्ते से पूछा, 'भाई, तुम्हारी गरदन पर यह कैसा दाग है?'

कुत्ता बोला, 'अरे वह कुछ भी नहीं है।'

बाघ ने कहा, 'नहीं भाई, मुझे बताओ मुझे जानने की बड़ी इच्छा हो रही है।'

कुत्ता बोला, 'गरदन में कुछ भी नहीं है, लगता है पट्टे का दाग लगा होगा।'

बाघ ने कहा, 'पट्टा क्यों?'

कुत्ते ने कहा, 'पट्टे में जंजीर फँसाकर पूरा दिन मुझे बाँधकर रखा जाता है।'

यह सुन बाघ विस्मित होकर कह उठा, 'जंजीर से बाँधकर रखा जाता है? तब तो तुम जब जहाँ जाने की इच्छा हो जा नहीं सकते?'

कुत्ता बोला, 'ऐसी बात नहीं है, दिन के समय भले ही बँधा रहता हूँ, परंतु रात के समय मुझे छोड़ दिया जाता है, तब मैं जहाँ चाहे खुशी से जा सकता हूँ। इसके अतिरिक्त मालिक के नौकर मेरी कितनी देखभाल करते हैं, अच्छा खाना देते हैं। स्नान कराते हैं। कभी—कभी मालिक भी स्नेहपूर्वक मेरे शरीर पर हाथ फेरते हैं। जरा सोचो, मैं कितने सुख में रहता हूँ।'

बाघ ने कहा, 'भाई, तुम्हारा सुख तुम्हीं को मुबारक हो, मुझे ऐसे सुख की जरूरत नहीं है। अत्यंत पराधीन होकर राजसुख भोगने की अपेक्षा स्वाधीन रहकर भूख का कष्ट उठाना हजार गुना अच्छा है। मैं अब तुम्हारे साथ नहीं जाऊँगा।' यह कहकर बाघ फिर जंगल की तरफ लौट गया।

❑

11

दूध—पानी

बहुत समय पहले की बात है, एक जंगल के किनारे कुछ ग्वाले रहते थे। वे अपनी गाय—भैंसों का दूध बेचने के लिए शहर में जाया करते थे। उन ग्वालों में एक ग्वाला बहुत लालची था। वह रोज दूध बेचने जाते समय रास्ते में पड़नेवाली नदी में से दूध में पानी मिला दिया करता था।
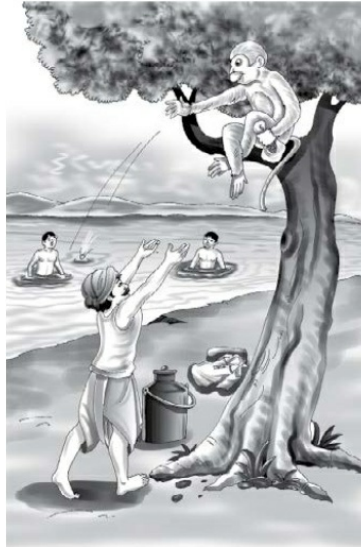
एक दिन जब ग्वाले बाजार से अपनी बिक्री का हिसाब करके पैसे लेकर घर को आ रहे थे तो दोपहर की गरमी से तंग आकर उन्होंने नदी में नहाने का मन बनाया। सभी ग्वालों ने अपने—अपने कपड़े उतारकर एक पेड़ के नीचे रख दिए और नहाने के लिए नदी के बीच में चले गए। कुछ ही देर में पेड़ से एक बंदर उतरा और उस लालची ग्वाले के कपड़े उठाकर ले गया। उसने उसकी जेब से रुपए के सिक्कोंवाली थैली निकाली और एक—एक करके नदी में फेंकने लगा।

ग्वाला चिल्लाया और अपने कपड़े और पैसे छुड़ाने के लिए बंदर के पीछे भागा। इतनी देर में वह बंदर बहुत सारे सिक्के नदी में गिरा चुका था। लालची ग्वाला अपने भाग्य को कोसने लगा और कहने लगा कि देखो मेरी महीने की कमाई के आधे पैसे बंदर ने पानी में मिला दिए। इस पर उसके साथी ग्वालों ने कहा, 'तुमने जितने पैसे पानी मिलाकर कमाए थे, उतने पैसे पानी में ही चले गए। पानी की कमाई पानी में।'

उस दिन से उस ग्वाले ने दूध में पानी मिलाना छोड़ दिया और ईमानदारी से दूध बेचने लगा। तभी कहते हैं, पाप की कमाई कभी फलती नहीं है।

❑

12

मुसीबत में दोस्त

बहुत समय पहले की बात है। किसी जंगल में एक हाथी रहता था। उसका कोई दोस्त नहीं था। एक दिन उसे जंगल के बीच में पेड़ पर एक बंदर दिखाई दिया। हाथी ने बंदर से कहा, 'बंदर भाई, मेरा कोई दोस्त नहीं है। आप मेरे साथ दोस्ती करोगे?'

बंदर ने कहा, 'आप बहुत बड़े हैं, मैं बहुत छोटा। और आप मेरी तरह पेड़ पर उछल—कूद भी नहीं सकते। इसलिए आपकी और मेरी दोस्ती नहीं हो सकती।'

अगले दिन हाथी को एक खरगोश मिला। हाथी ने खरगोश को भी दोस्त बनने के लिए कहा, पर खरगोश ने बोला, 'आप बहुत बड़े हो, मैं बहुत छोटा हूँ, आप मेरे बाड़े में भी नहीं आ सकते, इसलिए हमारी दोस्ती नहीं हो सकती।'

फिर हाथी तालाब के किनारे गया, वहाँ उसे एक मेढक मिला। हाथी ने मेढक से कहा, 'मेढक भाई, क्या तुम मुझसे दोस्ती करोगे?'

मेढक ने कहा, 'जरा अपना शरीर तो देखो, कितना बड़ा है और मैं कितना छोटा हूँ, इसलिए हमारी दोस्ती संभव नहीं है।'

अगले दिन हाथी को एक गीदड़ मिल गया। हाथी ने उससे भी दोस्ती करने के लिए कहा, पर गीदड़ ने भी दोस्ती करने से मना कर दिया। शाम को हाथी ने देखा कि जंगल के सभी जानवर भागे जा रहे हैं। हाथी ने उनको रोककर कारण जानना चाहा। गीदड़ ने बताया कि जंगल का राजा शेर सबको मारकर खा जाना चाहता है, इसलिए सभी जानवर अपनी जान बचाने के लिए भाग रहे हैं।

हाथी ने शेर से कहा, 'तुम इस तरह सभी जानवरों के पीछे क्यों पड़े हो? सभी जानवरों को एक साथ ही मार के खा लोगे क्या?'

शेर ने हाथी से कहा, 'यह मेरी मरजी, तुम रोकनेवाले कौन होते हो?'

हाथी को यह सुनकर बहुत गुस्सा आया और उसने जोर से एक लात शेर को मार दी। शेर छिटक कर दूर जा गिरा। उसे बहुत चोट लगी। और डर के मारे शेर वहाँ से भाग गया। जब हाथी ने यह बात सभी जानवरों को बताई तो सभी बहुत खुश हुए और सभी ने हाथी को अपना दोस्त बना लिया। कहते हैं न कि दोस्त वही, जो मुसीबत में काम आए।

❑

13

तिरस्कार

किसी शहर में एक धनी व्यक्ति रहता था। धनी व्यक्ति बहुत दयालु और ईश्वर भक्त था। उसका नियम था कि वह किसी अतिथि को भोजन कराए बिना खुद भोजन नहीं करता था। एक दिन उसके यहाँ कोई भी अतिथि नहीं आया। इसलिए वह खुद किसी को ढूँढ़ने निकल पड़ा। मार्ग में उसे एक बहुत वृद्ध्ध तथा दुर्बल मनुष्य मिला। उसे भोजन का निमंत्रण देकर बड़े आदरपूर्वक वह घर ले आया। हाथ—पैर धुलवाकर उसे भोजन कराने के लिए बैठाया।

अतिथि ने भोजन सम्मुख आते ही खाने के लिए ग्रास उठाया। उसने न तो भोजन मिलने के लिए ईश्वर को धन्यवाद दिया और न ही ईश्वर की बंदगी की। धनी व्यक्ति को यह देखकर हैरानी हुई। उसने अतिथि से इसका कारण पूछा। अतिथि ने कहा, 'मैं तुम्हारे धर्म को माननेवाला नहीं हूँ, मैं अग्निपूजक हूँ। अग्नि को मैंने अभिवादन कर लिया है।'

धनी व्यक्ति को यह सुनकर बहुत गुस्सा आया और अतिथि को कहा, 'नास्तिक कहीं का। चल निकल मेरे यहाँ से।'

सेठ ने वृद्ध्ध को उसी समय धक्के देकर घर से बाहर निकाल दिया।

उसी समय आकाशवाणी हुई कि 'धनी, जिसे इतनी उम्र तक मैं प्रतिदिन खुराक देता रहा हूँ, उसे तुम एक समय भी नहीं खिला सके। उल्टा तुमने निमंत्रण देकर, घर बुलाकर उसका तिरस्कार किया।'

आकाशवाणी सुनकर धनी को अपने गर्व तथा व्यवहार पर अत्यंत दु:ख हुआ। वह शर्म से गड़ गया।

❑

14

मेढक से सीख

बहुत समय पहले की बात है। किसी जंगल में बहुत सारे खरगोश रहा करते थे। खरगोश बहुत दुर्बल और डरपोक थे। ताकतवर जानवर उन्हें देखते ही मारकर खा जाते थे। इस कारण उन्हें हमेशा अपने प्राणों के लिए शंकित रहना पड़ता था। एक दिन सभी खरगोशों ने मिलकर एक सभा बुलाई। सभा में उन्होंने निश्चय किया कि सदा भयभीत रहने की अपेक्षा प्राण त्याग देना ही अच्छा है। इसलिए जैसे भी हो, हम लोग आज ही प्राण त्याग देंगे।

ऐसी प्रतिज्ञा करने के बाद निकट के तालाब में कूदकर प्राण देने की इच्छा से सभी खरगोश वहाँ जा पहुँचे। उस तालाब के किनारे कुछ मेढक भी बैठे हुए थे। खरगोशों के नजदीक पहुँचते ही मेढक भय से व्याकुल होकर पानी में कूद पड़े। इसे देखकर खरगोशों का नेता अपने साथियों से बोला, 'मित्रो, हमारा इतना भयभीत होना और खुद को इतना कमजोर समझना अच्छा नहीं है। आपने यहाँ आकर देखा कि कुछ प्राणी ऐसे भी हैं, जो हमसे भी अधिक दुर्बल और डरपोक हैं। हमें इससे सबक सीखना चाहिए, हमें जान देने की बजाय हालात से लड़ना चाहिए। सभी जंगल में वापस आ गए।

मनुष्य को अपनी कमजोर स्थिति के समय निराश नहीं होना चाहिए। ऐसे कई लोग मिल जाएँगे, जिनकी अवस्था हमसे भी खराब होगी।

❑

15

दो तोते

बहुत समय पहले की बात है। एक गाँव में एक शिकारी रहा करता था। वह जंगल से चिड़ियों को पकड़कर लाता था और कस्बे में जाकर उन्हें बेच दिया करता। उससे जो कुछ भी मिलता, उससे अपना और अपने परिवार का पेट पालता था। एक दिन वह जंगल में घूम रहा था। उसे एक पेड़ के कोटर में तोते के दो बच्चे खेलते हुए दिखाई दिए। उसने तोते के उन बच्चों को पकड़ लिया और अगले दिन नगर में बेच दिया।

एक बच्चा एक चोर ने खरीद लिया और एक बच्चा किसी सज्जन आदमी ने। तोते के बच्चे धीरे—धीरे बड़े हो गए। उन्होंने बोलना भी सीख लिया। एक दिन नगर में राजा घूमने आया, जैसे ही राजा चोर के घर के पास आया तो तोता जोर—जोर से बोलने लगा, 'शिकार आया है, लूट लो बच के न जाने पाए।'

राजा आगे बढ़ गया, उसे आगे उस सज्जन का घर मिला। जैसे ही तोते ने राजा को देखा तो बोल पड़ा, 'नमस्तेजी, आप का स्वागत है, आप थक गए होंगे, बैठिए चाय—पानी पी कर जाएँ।'

राजा दोनों की बात सुनकर हैरान थे। कुछ समझ में नहीं आ रहा था। आगे जाने पर राजा को वही शिकारी मिल गया। राजा ने शिकारी को बुलाकर पूछा कि दोनों तोते एक समान हैं, पर दोनों की भाषा में इतना फर्क क्यों है।

बहेलिए ने बताया कि यह सब संगत का असर है। एक तोते का मालिक चोर है, जो उसके घर में होता है, वह तोते ने सीख लिया है और दूसरे तोते का मालिक एक सज्जन आदमी है, जो उसके घर में होता है, वह उसके तोते ने सीख लिया है।

❑❑❑